hearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15

सृष्टि संवत् 1960853115
विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

E-mail : aryapsharyana@gmail.com
Website : www.apsharyana.org

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 11 अंक : 38 रोहतक, 7 मार्च, 2015 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में मासिक सत्संग कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न

रोहतक (1 मार्च, 2015)। मा० रामपाल आर्य मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने बताया कि प्रति मास होने वाले प्रथम रविवार को सत्संग यज्ञ से आरम्भ हुआ जिसके ब्रह्मा श्री जितेन्द्र शास्त्री व श्री जयपाल आर्य रहे।

मुख्यवक्ता भारतवर्ष के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ० रामप्रकाश पूर्व सांसद एवं आर्यजगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशिका श्रीमती सुमित्रा आर्या, श्रीमती दया आर्या, श्री सुशील आर्य, श्री हनुमत आर्य, तथा महात्मा नित्यानन्द के पौत्र रिटायर्ड डी.आर.ओ. श्री महेन्द्रसिंह धनखड़ तथा मंच संचालन आचार्य अभय आर्य ने किया।

डॉ० रामप्रकाश जी ने वेदों पर आधारित अपने सारगर्भित प्रवचन से श्रोताओं को आनन्दित ही नहीं किया बल्कि उनके दिलों पर एक अमिट छाप छोड़ गए। उन्होंने आह्वान किया

कि अब आपने उन सब मजहब के ठेकेदारों तथा मठाधीशों के चरित्र को देख लिया, उन सबकी असलियत पर से पर्दा उठ गया है। आप सब वेदों में दिखाए सत्य मार्ग पर चलकर अपना तथा अपने बच्चों का भविष्य बनायें। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा **'वेदों की ओर लौटो'** अभियान में भरपूर सहयोग करें। बहन सुमित्रा आर्या, बहन दया आर्या, श्री सुशील आर्य, श्री हनुमत आर्य ने जहाँ अपने गीतों द्वारा भावविभोर किया वहीं महात्मा नित्यानन्द पौत्र महेन्द्रसिंह धनखड़ ने उनके गीतों द्वारा उनकी यादों को ताजा कर दिया। आज के सत्संग में प्रमुख व्यक्तियों में आचार्य योगेन्द्र आर्य प्रधान गोशाला संघ हरियाणा, आचार्य सर्वमित्र आर्य, आचार्य हरिदत्त गुरुकुल लाढौत, स्वामी सत्यमुनि, श्री कर्णसिंह मोर, श्री हवासिंह राठी, श्री बलराज खुराना, श्री अनूप श्योराण, श्री सुभाष सांगवान, डॉ० सत्यपाल, राजेश दहिया, जयपाल आर्य आदि शामिल थे। पूज्य आचार्य बलदेव जी, श्री रामपाल आर्य सभामन्त्री एवं आचार्य योगेन्द्र आर्य, प्रधान गोशाला संघ हरियाणा ने सभी आर्यजनों से निवेदन किया है कि होली का पर्व हर्षोल्लास से मनायें। गन्दे पानी, पटाखे तथा कीचड़ से दूर रहें एवं गऊमाता की रक्षाहित में गोशाला में अधिक से अधिक दान दें।

अन्त में आचार्य बलदेव जी ने सत्संग में उपस्थित आर्यजनों को अपना आशीर्वचन दिया। सत्संग समापन के बाद सभी आर्य बहन-भाइयों ने ऋषिलंगर का आनन्द लिया।

—रामपाल आर्य, सभामन्त्री

मनुष्य जीवन में ब्रह्म में निष्ठा का महत्त्व

❑ मनमोहन कुमार आर्य

ब्रह्म सबसे बड़ी सत्ता को कहते हैं। ईश्वर संसार में सबसे बड़ा होने के कारण ब्रह्म कहलाता है। यज्ञ के मुख्य पुरोहित को भी यज्ञ का ब्रह्मा कहकर सम्बोधित करते हैं। ब्रह्म में निष्ठा का होना ब्रह्मनिष्ठा कहा जाता है। आद्य स्वामी शंकराचार्य जी ने विवेक-चूडामणि नाम से एक ग्रन्थ का प्रणयन किया था। इसका आरम्भ मंगलाचरण एवं ब्रह्म निष्ठा का महत्व शीर्षकान्तर्गत श्लोकों से होता है। इन दोनों शीर्षकों के अन्तर्गत स्वामीजी ने जो विचार प्रस्तुत किए हैं वह अत्यन्त महत्वपूर्ण होने के कारण

हम इस लेख में प्रस्तुत कर रहे हैं। मंगलाचरण में स्वामी जी कहते हैं कि जो ईश्वर अज्ञेय होकर भी सम्पूर्ण वेदान्त के सिद्धान्त-वाक्यों से जाने जाते हैं उस परमानन्द स्वरूप सद्गुरुदेव गोविन्द को मैं प्रणाम करता हूं। यहां स्वामी जी ईश्वर अर्थात् ब्रह्म को अज्ञेय बताते है। अज्ञेय उसे कहते हैं जिसे जाना नहीं जा सकता। वह अज्ञेय ईश्वर ही सम्पूर्ण वेदान्त के सिद्धान्त-वाक्यों से जाने जाते हैं। अर्थात् यदि ईश्वर को जानना हो तो उस अज्ञेय ईश्वर को वेदान्त दर्शन का अध्ययन कर जाना जा सकता है, यह सत्य है। ब्रह्मनिष्ठा का महत्व बताते हुए पहले मन्त्र में उन्होंने कहा है कि जीवों का प्रथम तो नर अर्थात् मनुष्य जन्म ही दुर्लभ है, उससे भी पुरुषत्व और उससे भी ब्राह्मणत्व का मिलना कठिन है, ब्राह्मण होने से भी वैदिक धर्म का अनुगामी होना और उससे भी विद्वता का होना कठिन है। यह सब कुछ होने पर भी आत्मा और अनात्मा का विवेक, सम्यक् अनुभव, ब्रह्म आत्म भाव से स्थिति और मुक्ति-ये तो करोड़ों जन्मों में किये हुए शुभकर्मों के परिपाक के बिना प्राप्त हो ही नहीं सकते। दूसरे श्लोक में आपने कहा है कि ईश्वर की कृपा से ही जिसकी प्राप्ति हो सकती है वे मनुष्यत्व, मुमुक्षुत्व अर्थात् मुक्त होने की इच्छा और महान् पुरुशों का संग-ये तीनों ही दुर्लभ हैं। इसके आगे वह कहते हैं कि किसी प्रकार इस दुर्लभ मनुष्यजन्म को पाकर और उसमें भी, जिसमें श्रुति अर्थात् वेद के सिद्धान्तों का ज्ञान होता है, ऐसा पुरुषत्व पाकर जो मूढ़बुद्धि अपने आत्मा की मुक्ति के लिये प्रयत्न नहीं करता, वह निश्चय ही आत्मघाती है, वह असत् में आस्था रखने के कारण अपने को नष्ट करता है। सरल शब्दों में शंकराचार्य जी ने

क्रमशः पृष्ठ 2 पर....

thearyasamaj.org

मनुष्य जीवन में ब्रह्म में निष्ठा..... प्रथम पृष्ठ का शेष.....

कहा है कि वेद का ज्ञान मनुष्य जीवन में ही हो सकता है। ऐसा जीवन प्राप्त होने पर भी जो अपनी आत्मा की मुक्ति वा मोक्ष के लिए प्रयत्न नहीं करता वह मूढ़ बुद्धि और आत्मघाती है अर्थात् वह असत् अर्थात् ईश्वर के विपरीत जड़ पदार्थों में आसक्त होकर अपने जीवन को नष्ट करता है। इस श्रेणी में संसार के 99 प्रतिशत से अधिक लोग आते हैं और हम स्वयं भी इसी श्रेणी में हैं। यह महद् आश्चर्य की बात है। इसके आगे आप कहते हैं कि दुर्लभ मनुष्य-देह और उसमें भी पुरुषत्व को पाकर जो स्वार्थ साधन अर्थात् ईश्वर व मोक्ष की प्राप्ति में प्रमाद करता है, उससे अधिक मूढ़ और कौन होगा? वह कहते हैं कि भले ही कोई शास्त्रों की व्याख्या करें, अग्निहोत्र यज्ञ वा देवयज्ञ करें, नाना शुभ कर्मों को करें अथवा देवताओं को भजें तथापि जब तक ब्रह्म और आत्मा के यथार्थ स्वरूप का बोध नहीं होता तब तक ब्रह्मा के 100 कल्पों अर्थात् 8. 64×100 अरब वर्षों के बीत जाने पर भी मुक्ति नहीं हो सकती अर्थात् दुःखों से नहीं छूट सकता। वह कहते हैं कि धन से अमृतत्व की आशा नहीं है एवं यह धन-समृद्धि मुक्ति का हेतु कर्म नहीं है, इस बात को वेद स्पष्ट बतलाते हैं। उपर्युक्त विचार स्वामी शंकराचार्य जी ने प्रकट किये हैं। यह सभी विचार महर्षि दयानन्द को भी अभीष्ट वा स्वीकार्य थे। ज्ञानी, समझदार व स्वयं को शिक्षित व्यक्ति कहलाने वालों को स्वामी शंकराचार्य जी द्वारा कहे गये एक-एक शब्द पर गम्भीरता से विचार करना चाहिये और अपना भावी पथ प्रशस्त करना चाहिये।

इसके बाद स्वामी शंकराचार्य ने जो विचार प्रस्तुत किये हैं उन्हें ज्ञानोपलब्धि के उपाय कहा जा सकता है। वह लिखते हैं कि इस कारण विद्वान् मनुष्य को सम्पूर्ण बाह्य भोगों की इच्छा त्यागकर सन्त शिरोमणि गुरुदेव की शरण में जाकर उनके उपदेश किये हुए विषय में समाहित होकर अपनी मुक्ति के लिए प्रयत्न करें। इस पर हमारा कहना है कि स्वामी शंकराचार्य जी के बाद मुक्ति पथ पर आरूढ़ कराने वाले एकमात्र गुरुदेव स्वामी दयानन्द सरस्वती हुए हैं। उनका समस्त साहित्य मनुष्यों को मुक्ति पथ का पथिक बनाता है और उस पर चलकर मुक्ति को प्राप्त किया जा सकता है। शंकराचार्य जी आगे कहते हैं कि निरन्तर सत्य वस्तु ईश्वर के दर्शन में स्थित रहता हुआ उपासक योगारूढ़, ध्यानावस्थित वा समाधिस्थ होकर संसार-समुद्र में डूबी हुई अपनी आत्मा का आप ही उद्धार करे। योगाभ्यासी व आत्मा की उन्नति के लिए प्रयासरत धीर वा विवेकी विद्वानों को सम्पूर्ण असत् वा मुक्ति विरोधी कर्मों का त्याग कर भव-बन्धन की निवृति के लिये प्रयत्न करना चाहिये। भलीभांति विचार करने से सिद्ध व प्राप्त होने वाला निर्भ्रान्त ज्ञान भ्रम से उत्पन्न हुए महान् दुःखों को नष्ट करने वाला होता है। वह कहते हैं कि ईश्वर के प्रति कल्याणप्रद प्रार्थना व स्तुति वचनों द्वारा ही सत्यस्वरूप परमेश्वर का आत्मा में निश्चय होता है। ईश्वर के यथार्थ स्वरूप का निश्चय केवल स्नान, दान या सैकड़ों प्राणयामों से नहीं हो सकता है।

इसके बाद स्वामी जी महाराज ने जो बातें कही हैं उन्हें अधिकारि-निरूपण कह सकते हैं। वह लिखते हैं कि मुख्यतः अधिकारी साधक को ही ईश्वर उपासना के फल की सिद्धि होती है, देश काल आदि उपाय भी उसमें सहायक अवश्य होते हैं। अतः ब्रह्मवेत्ताओं में श्रेष्ठ दयासागर योग्य गुरुदेव की शरण में जाकर जिज्ञासु को आत्म-तत्व का विचार करना चाहिये। स्वाध्याय भी इस कार्य में सहायक रहता है अतः हमारी दृष्टि में वेद, उपनिशद्, दर्शन व सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों का अध्ययन करना भी उपयोगी रहता है। साधक को कैसा होना चाहिये, इसका उत्तर देते हुए स्वामी शंकराचार्य जी कहते हैं कि जो बुद्धिमान् हो, विद्वान हो और तर्क-वितर्क में कुशल हो, ऐसे लक्षणों वाला पुरुष ही आत्म विद्या का अधिकारी होता है। यहां साधक व भक्त के लिए बुद्धिमान व विद्वान होना तथा तर्क-वितर्क में कुशल होना आवश्यक बताया गया है। आजकल इसकी उपेक्षा की जाती है परन्तु यह विचार महर्षि दयानन्द जी के विचारों व मान्यताओं के पोशक हैं। इससे अतीव महत्वपूर्ण बात स्वामी जी कहते हैं कि जो सदसद-विवेकी, वैराग्यवान्, शम-दमादि शट्सम्पतियुक्त और मुमुक्षु हो उसी में ब्रह्-जिज्ञासा की योग्यता मानी गयी है। स्वामी जी की यह मान्यतायें ऐसी हैं जिनकी आजकल प्रायः सभी भक्तजन उपेक्षा करते हैं। इस पर विशेश ध्यान देने की आवश्यकता है। धर्म प्रचारकों को मुख्यतः इस पर अपना ध्यान केन्द्रित रखकर धर्म प्रचार करना चाहिये।

इसके बाद का अध्याय साधन-चतुष्टय के नाम से जाना जाता है। इस अध्याय में स्वामी शंकराचार्य जी कहते हैं कि यहां मनस्वियों ने जिज्ञासा के चार साधन बताये। उनके होने से ही सत्यस्वरूप आत्मा अर्थात् परमात्मा में स्थिति हो सकती है, उसके बिना नहीं। चार साधनों में पहला साधन नित्य व अनित्य वस्तुओं में विवेक को माना जाता है। दूसरा लौकिक एवं पारलौकिक सुख-भोग में वैराग्य होना है, तीसरा शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा व समाधान-ये छः सम्पत्तियां हैं और चौथा व अन्तिम मुमुक्षुता है। ब्रह्म अर्थात् ईश्वर का अस्तित्व सत्य है। इसमें किसी को भी भ्रमित नहीं होना चाहिये। वैज्ञानिकों व बहुत से शिक्षित मनुष्यों द्वारा ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार न करने व बहुतों के ईश्वर के वास्तविक स्वरूप से भिन्न स्वरूप को मानने से संसार में बहुत से अनर्थ हुए हैं व हो रहे हैं। अतः ब्रह्म सत्य है, इसमें सभी को पूरी निष्ठा रखनी चाहिये। ब्रह्म चेतन है तथा यह जगत जड़ है। अतः यदि चेतन तत्व सत्य है तो अचेतन व जड़ तत्व के विरोधी गुणों का होने के कारण इसे असत् कहा जाता है। जहां कार्य प्रकृति वा सृष्टि को असत कहा जाता है इसका अर्थ यह मानना चाहिये कि यह सृष्टि चेतन तत्व ईश्वर के विरोधी गुण वाली है। इस प्रकार के निश्चय को ही 'नित्यानित्यवस्तु-विवेक' कहते हैं। नेत्रों से दर्शन व श्रोत्रों से श्रवण आदि के द्वारा मानव शरीर देह से लेकर ब्रह्मलोक पर्यन्त सम्पूर्ण अनित्य भोग्य पदार्थों में जो आवश्यकतानुसार त्याग भाव से भोग करने व अधिक के प्रति जो घृणा बुद्धि है, वही 'वैराग्य' कहलाता है। बारम्बार इन्द्रियों के विषयों के प्रति दोष-दृष्टि रखने से वैराग्य उत्पन्न होकर चित्त का अपने लक्ष्य ब्रह्म में स्थिर हो जाना ही 'शम' है। पांच कर्मेन्द्रिय और पांच ज्ञानेन्द्रिय, दोनों को उनके विषयों से पृथक कर व खींच कर अपने-अपने इन्द्रिय गोलक में स्थित करना व उनको विषयों से रोकना 'दम' कहलाता है। चित्त की वृत्तियों या बोलचाल की भाषा में मनोवृत्ति का बाह्य विषयों का आश्रय न लेना व उन पर संयम करना ही 'उपरति' है। चिन्ता और शोक से रहित होकर बिना कोई प्रतिकार किये सब प्रकार के कष्टों का सहन करना 'तितिक्षा' कहलाती है। श्रद्धा आर्ष शास्त्रों और ब्रह्म व वेद ज्ञानी गुरुओं में विश्वास बुद्धि करने को कहते हैं जिससे की इच्छित वस्तु की प्राप्ति होती है। 'समाधान' अपनी बुद्धि को सब प्रकार शुद्ध ब्रह्म में ही सदा स्थिर रखने को कहते हैं। चित्त की सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति का नाम समाधान नहीं है। 'मुमुक्षता' अहंकार से लेकर देहपर्यन्त जितने अज्ञान-कल्पित बन्धन हैं, उनको अपने स्वरूप के ज्ञान द्वारा त्यागने की इच्छा को कहते हैं। मुमुक्षुता मन्द और मध्यम भी हो तो वैराग्य तथा शमादि षट्सम्पत्ति और गुरुकृपा से बढ़कर फल उत्पन्न करती है। शंकराचार्य जी कहते हैं कि जिस पुरुष में वैराग्य और मुमुक्षुत्व तीव्र होते हैं, उसी में शमादि चरितार्थ और सफल होते हैं। यह बात व्यवहारिक उदाहरणों से सत्य सिद्ध है। आगे वह लिखते हैं जहां इन वैराग्य अैर मुमुक्षुत्व की मन्दता है वहां शामादि का भी मरुस्थल में जल-प्रतीति के समान आभासमात्र ही समझना चाहिये। मुक्ति की कारणरूप सामग्री में भक्ति ही सबसे बढ़कर है और अपने वास्तविक स्वरूप का अनुसन्धान करना ही 'भक्ति' कहलाता है। कोई-कोई 'स्वात्म-तत्व का अनुसंधान ही भक्ति है', ऐसा कहते हैं। भक्ति की इस परिभाषा को धर्मप्रेमियों को समझना चाहिये। प्रायः सभी मतों के भक्तों में भक्ति के इस अनिवार्य गुण की उपेक्षा देखी जाती है।

हमने इस लेख में जो वर्णन किया है वह अपने अध्ययन के अनुसार और वैदिक मत से पोषित विचारों के अनुरूप है। महर्षि दयानन्द ने कहा है कि ज्ञान कहीं से भी प्राप्त हो उसे प्राप्त कर लेना चाहिये। इसी विचार से महर्षि दयानन्द के विचारों की पुष्टि करने वाले आद्य शंकराचार्य जी के कुछ विचारों को उनकी पुस्तक से प्रस्तुत किया है। पाठक इन पर विचार करेंगे और अपने हित-अहित के अनुसार अपने जीवन की दिशा निर्धारित करेंगे, ऐसी हम अपेक्षा करते हैं।

196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001
फोनः 09412985121

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक पत्र में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001
E-mail : aryapsharyana@gmail.com

thearyasamaj.org

* ओ३म् *

प्रभु-दर्शन

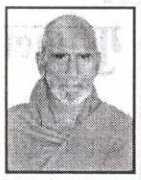

-: वेद-मन्त्र :-

वीडु चिदारुजत्नुभिर्गुहा चिदिन्द्र वह्निभिः।
अविन्द उस्त्रिया अनु॥ (साम० 852)

अर्थ—(वीडु चित्) दृढ़ संस्कार और वासनाओं को भी (आरुजत्नुभि) पूर्णतया भग्न कर देने वाले (वह्निभिः) तथा योगमार्ग पर ले चलने वाले और ज्ञान प्रकाश से प्रकाशित उपासक द्वारा (गुहाचित्) हृदय गुहा में छिपे हुये भी (इन्द्र) हे इन्द्र परमेश्वर आप (अविन्दः) प्राप्त कर लिये जाते हैं (उस्त्रिया अनु) आपको प्राप्त करने से पूर्व आपके दिव्य प्रकाश या ज्योतियाँ प्रकट होते हैं।

चित्त भूमि में जन्म-जन्मान्तर के संस्कार गहरी जड़ जमाए अनादि काल से चले आ रहे हैं। जैसे वस्त्र प्रक्षालन करते समय पहले साबुन आदि से सामान्य रूप में वस्त्र को साफ करते हैं। इसके पश्चात् जो गहरे दाग-धब्बे रह जाते हैं, उन्हें दूसरी बार साबुन लगाकर या अन्य किसी उपाय से छुड़ाने का यत्न किया जाता है वैसे ही अनादिकाल से पुण्यापुण्य और अविद्यादि क्लेशों के संस्कार बिना तप या प्रयत्न विशेष के नहीं छूटते। योगदर्शन 2.1 में इनके निवारणार्थ तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान रूप क्रिया योग का विधान किया है। तप में प्राणायाम को परम तप बतलाया है—

न तपस्तप इत्याहुः प्राणायामः परमं तपः दह्यन्ते ध्यायमानानां धातूनां हि यथा मलाः। तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषा प्राणस्य निग्रहात्॥ मनु० 6.71

जैसे स्वर्णादि धातुओं को अग्नि में तपाने से उसके दोष भस्म होकर वे शुद्ध हो जाती हैं वैसे ही प्राणायाम की अग्नि से मन एवं इन्द्रियों के दोष दूर हो जाते हैं। मन्त्र कहता है—

(वीडुचिदारुजत्नुभिः वह्निभिः) प्रबल वासनाओं को भी पराजित कर देने वाली प्राणायाम रूपी अग्नियों के द्वारा हे जीवात्मन्! (गुहाचित्) हृदय में (उस्त्रिया अनु) प्रभु के प्रकट होने से पहले जो ज्ञान का प्रकाश सा लक्षण प्रकट होते हैं, उनके साथ तूने (अविन्दः) प्रभु को प्राप्त कर लिया है।

वह्नि से ज्ञान की किरण या प्राणायाम अग्नि का ग्रहण किया है। जैसे सूर्य की किरणों को उत्तल लैंस से एक केन्द्र बिन्दु पर केन्द्रित करने पर वहाँ पर विद्यमान पदार्थ में अग्नि प्रकट हो जाती है वैसे ही ध्यान की ज्योति को हृदय में एकाग्र करने से हृदय में ज्ञान का प्रकाश आलोकित हो उठता है। प्राणायाम का महत्त्व योगदर्शन में बतलाते हुये कहा है-**ततः क्षीयते प्रकाशवरणम्** (योग० 2.22) प्राणायाम का अभ्यास करने से बुद्धि पर छाया अज्ञान का आवरण क्षीण हो जाता है और क्रमशः ज्ञान का प्रकाश होता जाता है। तथा धारणा-ध्यान में मन की योग्यता बढ़ जाती है।

यद्यपि ईश्वर निराकार है तदपि जब वह उपासक के हृदय में प्रकट होता है तो निम्न दृश्य दिखलाई देने लगते हैं—

नीहार धूमार्कानलानिलानां खद्योत विद्युत् स्फटिक शशीनाम् एतानि रूपाणि पुरः सराणि ब्रह्मण्यभिव्यक्ति कराणि योगे॥ श्वेताश्वतर 2.11

कुहरा, अग्नि, वायु, जुगनू, बिजली, स्फटिक मणि, चन्द्रमा और सूर्य जैसा प्रकाश जब साधक को दिखलाई दे तो समझो प्रभुदर्शन होने वाला है और भी लक्षण प्रकट होते हैं—

शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः पवमानस्य शुष्मिणः।
चरन्ति विद्युतो दिवि॥ साम० 894

(शुष्मिणः) पाप-पुण्य को सुखा देने वाले महाबली (पवमानस्य) सबके शोधक, शान्तिदायक भगवान् का (स्वनः) शब्द, आदेश (वृष्टेरिव) वर्षा के शब्द की भाँति (शृण्वे) मैं सुन रहा हूँ और (दिवि) मेरे मस्तिष्क में (विद्युतः) बिजलियाँ प्रकाश की झलक (चरन्ति) विचर रही हैं। यह धर्म मेध समाधि की अवस्था का वर्णन है।

(साभार-वेदस्वाध्याय)

—आचार्य बलदेव

वेबसाईट-सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन दिनांक 8 फरवरी 2015 को अपनी अधिकारिक वेबसाईट को प्रक्षेपण (शुभारम्भ) किया है जो www.apsharyana.org. के नाम से है। अधिक जानकारी एवं सुझाव के लिए मोबाइल नं० 9812611701 पर सम्पर्क करें।

—सभामन्त्री

गावो विश्वस्य मातरः

यह कथन आज के समाज पर कितना लागू होता है। शायद शून्य के बराबर है। आज के समाज में गाय का क्या महत्त्व कि यह माता है, इसमें बहुत गुण है। ये बातें जानते तो सब हैं, लेकिन कितने घरों में गाय हैं? लोग भैंस को रखना पसन्द करते हैं क्योंकि वह गाय के मुकाबले ज्यादा दूध देती है और गाय से ज्यादा कीमत में बिकती है। लेकिन वे यह बात कभी नहीं सोचते कि जो गुण गाय के अन्दर विद्यमान है, वह भैंस में नहीं है। आज के गिरते सांस्कृतिक मूल्यों के कारण गाय को अभागिनता का जीवन जीना पड़ रहा है। वे सड़क पर जाकर कचड़ा खाकर पेट भरने पर मजबूर हैं। ऐसा क्यों? क्योंकि हम अपनी संस्कृति को भूल गए। याद करो वह जमाना जब कृष्ण जैसे गोभक्त लाखों गायें रखते थे। हमारे घरों में पहली रोटी गाय की होती थी। गाय हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है। स्वामी दयानन्द ने गाय के महत्त्व को जाना और सर्वप्रथम गोशालाओं की नींव रखी और गोकरुणानिधि लिखकर जन-जन को चेताया कि अगर गोमाता का पालन न होगा तो इस धरा का सर्वनाश सुनिश्चित है। इस देश में जब-जब गाय के आंचल पर आंच आई तब-तब इस देश में कोई न कोई गोभक्त सामने आया है। उस गोभक्त हरफूल जाट जुलानी वाले को कौन भूल सकता है जिसने अंग्रेजों के राज में जो गाय पर अत्याचार करने वाले जाने कितने हत्थे बन्द करवाये। लेकिन उस समय मार से वह भी नहीं बच सका। आज के समय में परम गोभक्त आचार्य बलदेव जी महाराज अपना सम्पूर्ण जीवन पावमानी वेदमय व जीवनदायिनी गोमाता के रक्षण व संरक्षण में व्यतीत कर रहे हैं। गाय के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया आचार्य बलदेव जी ने। आज गाय अपने एक ऐसे बेटे को ढूंढ़ रही है जो उसकी रक्षा के लिए खड़ा हो। आज के समय में कैंसर को सबसे खतरनाक बीमारी माना जाता है। लेकिन केवल और केवल गाय के घी द्वारा ही बचना सम्भव है। वैज्ञानिकों ने शोध किया है कि अगर कैंसर के रोगी को गाय का घी खिलाया जाए तो उसके अन्दर कैंसर खत्म होने लगता है। धन्य है ये धरती जहाँ पर राम-कृष्ण जैसे गोपालकों ने गाय के महत्त्व को जाना और उसे बढ़ावा दिया। गाय का घी अनेक बीमारियों से लड़ने की ताकत रखता है। जैसे-गाय का घी नाक में डालने से कान का पर्दा बिना आप्रेशन के ठीक हो जाता है। जिस व्यक्ति को हार्ट अटैक की तकलीफ और चिकनाई खाने को मनाही हो तो गाय का घी खाने से उसका हृदय मजबूत होता है। गाय घी त्रिदोषों (वात, पित्त और कफ) को संतुलित रखता है और न जाने कितने रोगों को समाप्त करने का कार्य करता है गाय का घी। अतः प्रत्येक घर में एक गाय अवश्य पालें। सरकारी तन्त्र तो केवल नियम व कानून बनाने तक ही सीमित है इनको कार्यान्वित व क्रियान्वित करने के लिए आर्यों को ही कमर कसनी होगी।

-ब्रह्मचारी जयवीर आर्य,
वैदिक धाम, कुरुक्षेत्र

आवश्यकता है

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद के लिए मुख्य अध्यापक की आवश्यकता है। योग्यता एम.ए.बी.एड., गुरुकुलीय पृष्ठभूमि। वेतन योग्यतानुसार। साक्षात्कार के लिए पूर्ण विवरण, वैद्य परिचय पत्र, प्रमाण पत्र व फोटो आदि सहित दिनांक 14 मार्च 2015 को 12 बजे गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, सराय ख्वाजा, फरीदाबाद में पहुँचें।

-: सम्पर्क सूत्र :-

आचार्य विजयपाल
प्रधान (9416055044)
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मैनेजिंग कमेटी

प्रेमकुमार मित्तल एडवोकेट
सचिव (09818798217)
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मैनेजिंग कमेटी

भजनोपदेशकों के लिए सभा से सम्पर्क करें—

प्रदेश की सभी आर्यसमाजें अपने आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव या अन्य विशेष कार्यक्रमों के लिए भजनोपदेशकों के प्रोग्राम सुनिश्चित करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक से एक मास पूर्व पत्र द्वारा सम्पर्क करें।

—सभामन्त्री

thearyasamaj.org

महात्मा चैतन्यमुनि जी भुवनेश्वर, ओड़िसा में 'महर्षि दयानन्द सरस्वती सम्मान' से सम्मानित

आर्यजगत् के वरिष्ठ साहित्यकार एवं वैदिक प्रवक्ता व आनन्दधाम आश्रम ऊधमपुर जम्मू-कश्मीर के मुख्य संरक्षक व निदेशक तथा अन्य अनेक आश्रमों, साहित्यिक संस्थाओं के संचालक एवं संरक्षक महात्मा चैतन्यमुनि जी को भुवनेश्वर, ओड़िशा में **'महर्षि दयानन्द सरस्वती सम्मान'** से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान लाला लाजपतराय जी द्वारा स्थापित लोक सेवक मण्डल के राष्ट्रीय सचिव श्री दीपक मालव्य जी द्वारा दिया गया।

उल्लेखनीय है कि महात्मा जी की अब तक लगभग पच्चास साहित्यिक एवं आध्यात्मिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं तथा इन्हें अब तक साहित्य अकादमी सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के आर्यवीर संचालक, वेदप्रचार अधिष्ठाता, महामन्त्री तथा वरिष्ठ उपाध्यक्ष व कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में इन्होंने अभूतपूर्व सेवा की है जिसके लिए इन्हें सभा की ओर सम्मानित भी किया गया था। सभा की पत्रिका आर्य वन्दना के सम्पादन से ये बीस वर्षों से जुड़े रहे....पत्रिका आरम्भ करने तथा इसे प्रतिष्ठिता प्रदान करने में इनका अत्यधिक सहयोग रहा है। इन्होंने वैदिक वशिष्ठ पत्रिका, शब्द, नवनीत भारती तथा गूंजती घाटियाँ आदि पत्रिकाओं में भी सम्पादन सहयोग प्रदान किया है। ये एक प्रतिष्ठित लेखक ही नहीं बल्कि प्रबुद्ध वैदिक प्रवक्ता भी हैं जिन्होंने मानव मूल्यों की स्थापना हेतु देश-विदेश में वैदिक संस्कृति की सार्वभौमिक विचारधारा को अत्यधिक प्रभावशाली ढंग से प्रचारित एवं प्रसारित किया है।

—प्रबन्धक एवं प्रेस सचिव,
वैदिक वशिष्ठ आश्रम,
महादेव, सुन्दनगर, जिला मण्डी
(हिमाचल प्रदेश)

कोलेजियम बैठक (वार्षिक साधारण अधिवेशन) का एजेण्डा (कार्यसूची)

माननीय महोदय,

नमस्ते।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की कोलेजियम बैठक (वार्षिक साधारण अधिवेशन) **दिनांक 22 मार्च 2015 रविवार को प्रातः 11 बजे सभा कार्यालय बलिदान भवन, दयानन्दमठ रोहतक** में होना निश्चित हुआ है। अत: आपसे निवेदन है कि समय पर पधारने की कृपा करें।

विचारणीय विषय

1. दिवंगत आर्य नर-नारियों को श्रद्धांजलि।
2. गत साधारण सभा बैठक दिनांक 26 अक्तूबर 2014 की कार्यवाही की सम्पुष्टि।
3. सभा के आनुमानिक आय-व्यय बजट वर्ष 2015-2016 की स्वीकृति।
4. गत अन्तरंग सभा बैठक दिनांक 10 जनवरी 2015 के प्रस्ताव संख्या-13 'सभा के संविधान के उद्देश्यों में गोसंवर्धन एवं संरक्षण को शामिल करने के प्रस्ताव की सम्पुष्टि पर विचार।'
5. अन्य विषय सभा प्रधान जी की अनुमति से।

नोट—

1. सभी कोलेजियम सदस्यों से अनुरोध है कि अपना पहचान-पत्र फोटो सहित, जैसे—वोटर कार्ड, सभा द्वारा जारी पहचान-पत्र, राशन कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, पेन कार्ड आदि प्रमाणिक दस्तावेज साथ लाएं।
2. जो कोलेजियम सदस्य अपने सुझाव तथा प्रस्ताव रखना चाहते हैं, वे कृपया 16 मार्च 2015 तक लिखित रूप में सभा कार्यालय रोहतक में भेजने का कष्ट करें।
3. अपना एजेण्डा-पत्र अवश्य ही साथ लायें। इसके बिना सभा में प्रवेश नहीं हो सकेगा।
4. आनुमानिक आय-व्यय (बजट) की प्रति संलग्न भेजी जा रही है।

—रामपाल आर्य, सभामन्त्री

गुरुकुल हरिपुर (ओड़िशा) का वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण शान्त-कान्त-एकान्त वातावरण में स्थित गुरुकुल हरिपुर जुनानी (ओड़िशा) का पंचम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति एवं वार्षिक महोत्सव दिनांक 30, 31 जनवरी व 1 फरवरी 2015 को निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

त्रिदिवसीय सम्पूर्ण कार्यक्रमों का उद्घाटन गुरुकुल के यशस्वी प्रधान जयदेव आर्य राजकोट के शुभ करकमलों से ध्वजोत्तोलन पूर्वक प्रारम्भ हुआ। महोत्सव के अवसर पर पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती गुरुकुल आमसेना, पूज्य स्वामी अमृतानन्द सरस्वती (म.प्र.), डॉ. शिवदत्त पाण्डे (उ.प्र.), आचार्य अंशुदेव प्रधान छत्तीसगढ़ आर्य प्रतिनिधि सभा दुर्ग, गुरुकुल के संरक्षक श्री खुशहालचन्द्र आर्य कोलकाता, आचार्य राहुलदेव शास्त्री, डॉ. कैलाशचन्द्र शास्त्री एवं ओड़िशा के अनेक साधु-सन्तों विद्वान् उपस्थित होकर सबको प्रेरित, लाभान्वित किये।

महोत्सव के अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा वाणी एवं पाणि प्रतिभा प्रदर्शन हुआ। गुरुकुल के पंचम वर्ष पूर्ति होने पर गुरुकुल से प्रकाशित पंचायतन स्मारिका, मनुष्य जीवन का उद्देश्य, आर्यसमाज का संक्षिप्त परिचय, दैनिक अग्निहोत्र आदि प्रचार पत्रकों का विमोचन कार्यक्रम श्री केदार कश्यप शिक्षामंत्री छत्तीसगढ़ शासन, श्री पुष्पेन्द्रसिंह देवनगर उन्नयन मंत्री ओड़िशा सरकार, श्री बसन्त कुमार पण्डा, विधायक नुआपड़ा, श्री राजुभाई धोलकिया, श्री प्रसन्न पाढ़ी एवं स्थानीय जन प्रतिनिधि आदि महानुभावों के शुभ करकमलों से सम्पन्न हुआ।

लेखकों को सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा साप्ताहिक के लेखकों, सूचनाकारों से नम्र निवेदन है कि दस्तावेज पर अपने हस्ताक्षर करके भेजें। हस्ताक्षर नहीं करने पर भेजी गई प्रकाशन हेतु सामग्री का प्रकाशन नहीं किया जाएगा क्योंकि डाक द्वारा या E-mail द्वारा भेजी गई लेखन प्रकाशन हेतु दस्तावेज पर न तो लेखक के हस्ताक्षर होते हैं और न ही प्रस्तुतकर्त्ता के। समझ में नहीं आता कि लेखक और प्रस्तुतकर्ता अपनी नैतिक जिम्मेदारी से क्यों बचना चाहते हैं? लेखकों से अनुरोध है कि अपने लेख कम्प्यूटर द्वारा टाइप करवाकर या E-mail aryapsharyana@gmail.com पर भेजें। —सम्पादक

'आर्य प्रतिनिधि' के स्वामित्व आदि का विवरण

फार्म - 4 (नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थान	- दयानन्दमठ, रोहतक
2.	प्रकाशन अवधि	- साप्ताहिक
3.	मुद्रक का नाम	- रामपाल आर्य
	क्या भारत का नागरिक है	- हाँ
	पता	- सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
4.	प्रकाशक का नाम	- रामपाल आर्य
	क्या भारत का नागरिक है	- हाँ
	पता	- दयानन्दमठ, रोहतक
5.	सम्पादक का नाम	- रामपाल आर्य
	क्या भारत का नागरिक है	- हाँ
	पता	- सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
6.	उन उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हों।	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, रोहतक इसके प्रकाशन का सम्पूर्ण आय-व्यय वहन करता है। अन्य कोई हिस्सेदार नहीं है।

मैं, रामपाल आर्य एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर

(रामपाल आर्य)

thearyasamaj.org

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

भूमिका के प्रश्नोत्तर

❑ कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

गतांक से आगे....

प्रश्न-57. 'शान्तिपाठ' के मन्त्र में ओ३म् शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः, तीन बार क्यों बोली जाती है?

उत्तर-इस संसार में तीन प्रकार के दुःख हैं—(1) आध्यात्मिक-जो आत्मा में अविद्या, राग, द्वेष, मूर्खता और ज्वर पीड़ादि होते हैं। (2) आधिभौतिक-जो शत्रु, व्याघ्र और सर्पादि से प्राप्त होता है। (3) आधिदैविक-जो अतिवृष्टि, अति शीत, अति उष्णता मन और इन्द्रियों की अशान्ति से होता है। तीन बार शान्तिः शान्तिः शान्तिः इन तीन प्रकार से दुःखों से छुड़ाने की प्रभु से प्रार्थना की जाती है।

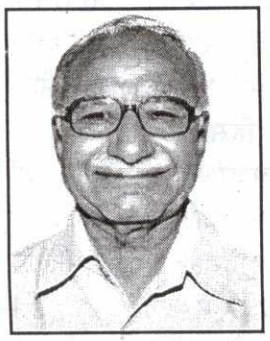

कन्हैयालाल जी आर्य

प्रश्न-58. परमेश्वर का नाम 'सूर्य' क्यों है?

उत्तर-जो प्राणी एवं अप्राणी जगत् के आत्मा होने और स्वप्रकाशस्वरूप, सब के प्रकाश करने से परमेश्वर का नाम 'सूर्य' है।

प्रश्न-59. परमेश्वर का नाम 'परमात्मा' क्यों है?

उत्तर-जो सब जीव आदि से उत्कृष्ट और जीव, प्रकृति तथा आकाश से भी अति सूक्ष्म और सब जीवों का अन्तर्यामी आत्मा है, इसीलिए उस परमेश्वर का नाम 'परमात्मा' है।

प्रश्न-60. परमेश्वर का नाम 'परमेश्वर' ही क्यों है?

उत्तर-सामर्थ्य वाले का नाम ईश्वर है। जो समर्थों में समर्थ, जिसके तुल्य कोई भी न हो, उसका नाम 'परमेश्वर' है।

प्रश्न-61. परमेश्वर का नाम 'सविता' क्यों है?

उत्तर-जो सब जगत् की उत्पत्ति करता है, इसीलिए परमेश्वर का नाम 'सविता' है।

प्रश्न-62. परमेश्वर का नाम 'देव' 'देवी' क्यों है?

उत्तर-जो किसी के सहाय के बिना क्रीडावत् सहज स्वभाव से सब जगत् को बनाता व क्रीड़ाओं का आधार है, जो सदा हर्षित, शोकरहित और दूसरों को हर्षित करने और दुःखों से पृथक् करने वाला होने के कारण परमेश्वर का नाम 'देव' 'देवी' है?

प्रश्न-63. परमेश्वर का नाम 'कुबेर' क्यों है?

उत्तर-जो अपनी व्याप्ति से सबका आच्छादन करे, इससे उस परमेश्वर का नाम 'कुबेर' है।

प्रश्न-64. परमेश्वर का नाम 'पृथिवी' क्यों है?

उत्तर-जो सब विस्तृत जगत् का विस्तार करने वाला है, इसीलिए उस परमेश्वर का नाम 'पृथिवी' है।

प्रश्न-65. परमेश्वर का नाम 'जल' क्यों है?

उत्तर-जो दुष्टों का ताड़न और अव्यक्त तथा परमाणुओं का परस्पर संयोग व वियोग करता है, इसीलिए उस परमेश्वर का नाम 'जल' है।

प्रश्न-66. परमेश्वर का नाम 'आकाश' क्यों है?

उत्तर-जो सब ओर से सब जगत् का प्रकाशक है, इसीलिए उस परमेश्वर का नाम 'आकाश' है।

प्रश्न-67. परमेश्वर का नाम 'अन्न' 'अन्नाद' और 'अत्ता' क्यों है?

उत्तर-जो सबको भीतर रखने, सबको ग्रहण करने योग्य, चराचर जगत् का ग्रहण करने वाला है, इसीलिए उस परमेश्वर का नाम 'अन्न' 'अन्नाद' और 'अत्ता' है।

प्रश्न-68. परमेश्वर का नाम 'वसु' क्यों है?

उत्तर-जिसमें सब आकाशादि भूत बसते हैं और जो सब में वास कर रहा है, इसीलिए उस परमेश्वर का नाम 'वसु' है।

प्रश्न-69. परमेश्वर को 'नारायण' क्यों कहते है?

उत्तर-जल और जीवों का नाम नारा है वे अयन अर्थात् निवास स्थान हैं जिसका, इसलिए सब जीवों में व्यापक परमेश्वर का नाम 'नारायण' है।

प्रश्न-70. परमेश्वर का नाम 'चन्द्र' क्यों है?

उत्तर-जो आनन्दस्वरूप और सब को आनन्द देने वाला है, इसलिए परमेश्वर का नाम 'चन्द्र' है।

प्रश्न-71. परमेश्वर का नाम 'मंगल' क्यों है?

उत्तर-जो आप मंगल स्वरूप और सब जीवों के मंगल का कारण है, इसलिए परमेश्वर का नाम 'मंगल' है।

प्रश्न-72. परमेश्वर को 'बुध' क्यों कहते हैं?

उत्तर-जो स्वयं बोधस्वरूप और सब जीवों के बोध का कारण है, इसलिए परमेश्वर का नाम 'बुध' है।

क्रमशः

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यकर्त्ताओं, सभा के सभी भजनोपदेशकों व अन्य कर्मचारियों को सूचित किया जाता है कि सभा परिसर का मेनगेट रात्रि 10 बजे बन्द कर दिया जाता है। जो कार्यकर्त्ता एवं अन्य कर्मचारी किसी कारणवश रात्रि को देर से पहुँचते हैं तो उनसे निवेदन है कि वे अपने रात्रि को देरी से पहुँचने की सूचना सायं 7 बजे तक सभा के सुरक्षा कर्मचारी श्री जितेन्द्र जी को फोन नं० 9896920754 व श्री सुरेश जी को फोन नं० 9466819939 पर सूचना अवश्य देवें ताकि उनके आवास एवं भोजन की व्यवस्था की जा सके।

—सभामन्त्री

जनहित में सूचना

जनहित में निःशुल्क बवासीर तथा सन्तान हेतु तुरन्त सम्पर्क करें—

धर्मपाल शास्त्री

सैक्टर-14, म०नं० 521, रोहतक मो० 9467280351

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज खेड़की जिला महेन्द्रगढ़	7 से 8 मार्च 2015
2.	गुरुकुल यमुनातट मंझावली, फरीदाबाद	7 से 8 मार्च 2015
3.	आर्यसमाज शेखपुरा खालसा, निकट घरोण्डा जिला करनाल	20 से 22 मार्च 2015

—सभामन्त्री

ओ३म्

(प्राचीन व आधुनिक शिक्षा का उत्तम सामंजस्य केन्द्र)

गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत, रोहतक (हरियाणा)

GURUKUL BHAIYAPUR LADHOT, ROHTAK

(Affiliated with C.B.S.E. New Delhi Code No. 531114)

गुरुकुल में उपलब्ध सुविधाएं एवं आवश्यक निर्देश

★ लिखित परीक्षा द्वारा 6 अप्रैल को मैरिट के आधार पर प्रवेश। नियमावली उपलब्ध है।
★ प्रविष्ट छात्रों का हॉस्टल में रहना आवश्यक है।
★ संध्या-हवन, योगासन, प्राणायाम खेल समन्वित नियमित दिनचर्या और धर्म शिक्षा द्वारा संस्कारित वातावरण।
★ सी.बी.एस.ई. बोर्ड नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त (मान्यता क्रमांक 531114) है।
★ इंग्लिश मीडियम (अंग्रेजी माध्यम)।
★ 10+1, 10+2 में आर्ट, कॉमर्स तथा नॉन मेडिकल संकाय।
★ आर्मी, नेवी तथा एयरफोर्स के लिए भर्ती में प्रशिक्षण।
★ सी.सी.टी.वी. कैमरों की व्यवस्था।
★ पुस्तकालय, वाचनालय, कम्प्यूटर तथा विज्ञान की आधुनिक प्रयोगशालाएं।
★ इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स के लिए भाषा प्रयोगशाला।
★ शुद्ध जल का निजी प्रबन्ध।
★ संस्था में स्थापित पं० रामप्रसाद बिस्मिल खेल अकादमी के माध्यम से खेल प्रशिक्षण। प्रशिक्षित कोचों एवं अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों द्वारा समय-समय पर दिशा निर्देश।
★ शुद्ध दूध के लिए निजी गोशाला।
★ 6 एकड़ का स्वच्छ तथा रमणीय परिसर।
★ स्टेशनरी तथा खाद्य पदार्थों के लिए कैन्टीन तथा वस्तु भण्डार की सुविधा।

3 K.M. STONE FROM BUS STAND, LADHOT ROAD, ROHTAK (HARYANA)

Contact : 01262-217550, 09992403892, 09467240298, 09416629972

thearyasamaj.org

मिलकर होली पर्व मनाओ

❑ पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक

भारत माँ के पुत्र-पुत्रियो! मिलकर होली पर्व मनाओ।
प्यार-प्रेम का रंग बरसाओ, पावन वैदिक धर्म निभाओ॥

फाल्गुन मास पूर्णिमा के दिन, यह त्यौहार मनाते हैं सब।
हलुआ, पूरी, खीर, पकौड़े, बना-बनाकर खाते हैं सब।
नीला, पीला, हरा, गुलाबी, लाल रंग बरसाते हैं सब।
यज्ञ, हवन, सत्संग, कीर्तन, करते और कराते हैं सब।

नशेबाज हैं जो नर-नारी, उनके सब दुर्व्यसन छुड़ाओ।
प्यार-प्रेम का रंग बरसाओ, पावन वैदिक धर्म निभाओ॥

अच्छी तरह समझ लो इसको, नवसस्येष्टि यज्ञ है होली।
आर्य पर्व है वेद पढ़ो तुम, करो न गन्दी कभी ठिठोली।
दुर्गुण त्यागो, सद्गुण धारो, बोलो सबसे मीठी बोली।
दान करो दानी बन जाओ, युवक-युवतियों की अब टोली।

अबला, दीन, अनाथ जनों को, खुश हो करके गले लगाओ।
प्यार-प्रेम का रंग बरसाओ, पावन वैदिक धर्म निभाओ॥

चोरी करना, जूआ खेलना, बुरे काम माने जाते हैं।
मांसाहारी और शराबी, कहीं नहीं आदर पाते हैं।
वेदविरोधी धूर्त नास्तिक, नफरत से देखे जाते हैं।
चरित्रहीन, व्यभिचारी, गुण्डे मार सदा जग में खाते हैं।

वैदिक पथ जो भूल गये हैं, उनका वैदिक मार्ग दिखाओ।
प्यार-प्रेम का रंग बरसाओ, पावन वैदिक धर्म निभाओ॥

धन, बल पाकर पाप कमाना, वेदों में है बुरा बताया।
खेती अरु व्यापार करो तुम, ऋषियों मुनियों ने समझाया।
सत्पथ पर तुम चलो निरन्तर, महर्षि मनु ने हे दर्शाया।
स्वार्थवाद में फँसकर हमने, गीता का सन्देश भुलाया।

सद्ग्रन्थों का पाठ करो नित, मित्रो! जीवनभर सुख पाओ।
प्यार-प्रेम का रंग बरसाओ, पावन वैदिक धर्म निभाओ॥

आए हो किसलिए जगत् में, हे मित्रो! तुम बैठ विचारो।
परोपकारी बनो साथियो, मानव हो मानवता धारो।
निद्रा त्यागो, होश संभालो, राम-कृष्ण के पुत्र दुलारो।
स्वामी दयानन्द बन जाओ, जग का बिगड़ा हाल सुधारो।

'नन्दलाल निर्भय' दुनिया में, अपना नाम अमर कर जागो।
प्यार-प्रेम का रंग बरसाओ, पावन वैदिक धर्म निभाओ॥

संपर्क-आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा) मो० 9813845774

शुभ सूचना

सभी धर्मप्रेमी सज्जनों को सूचित किया जाता है कि आगामी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सृष्टिसंवत् 1,96,08,53,116 (शनिवार 21 मार्च 2015) को प्रारम्भ हो रहा है। इस उपलक्ष्य में दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक के प्रांगण में पर्यावरण की शुद्धि के लिए वैदिक रीति से यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। सभी से प्रार्थना है कि वह समय पर पहुँचकर पुण्य के भागी बनें।

यज्ञ—प्रात: 8.30 से 9.30 बजे तक। यज्ञ ब्रह्मा-**आचार्य वेदमित्र जी**
भजन—9.30 से 10 बजे तक। **श्री सुशील आर्य**
मुख्यवक्ता—**डॉ० सुरेन्द्र कुमार** (अध्यक्ष, महर्षि दयानन्द विद्यापीठ महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक) प्रात: 10.00 से 11.15 तक
संयोजक—**मा० रामपाल आर्य** (मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा) प्रात: 11.15 से 11.35 तक
अध्यक्षता—**आचार्य विजयपाल जी** (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा) प्रात: 11.35 से दोपहर 12 बजे तक।
आशीर्वाद—**आचार्य बलदेव जी** (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली)

निवेदक—

आर्यसमाज सैक्टर-1, रोतहक, **स्त्री आर्यसमाज**, देवकालोनी रोहतक, **आर्यसमाज**, प्रेमनगर दुर्गा कॉलोनी, रोहतक, **वैदिक ज्ञान प्रसार न्यास**, रोहतक।
सम्पर्क सूत्र-09466008120, 09728884949, 09355674547

आर्यसमाज सिवानी बोलान का वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज सिवानी बोलान जिला हिसार का वार्षिक महोत्सव दिनांक 31 जनवरी व 1 फरवरी 2015 को विधिवत् सम्पन्न हुआ। प्रात: यज्ञ किया गया कई नवयुवकों ने यज्ञोपवीत लिया। इस अवसर पर स्वामी सर्वदानन्द जी कुलपति गुरुकुल धीरणवास, चौ० हरिसिंह सैनी संरक्षक आर्यसमाज नागोरी गेट हिसार श्री बदलूराम आर्य, सेठ बजरंगलाल गोयल, डॉ० प्रमोद योगार्थी आचार्य दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार, श्री रामकुमार आर्य प्रधान वेदप्रचार मण्डल जिला हिसार आदि ने राष्ट्ररक्षा, पाखण्ड-खण्डन, चरित्र निर्माण, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, गोरक्षा, व नशाबन्दी आदि विषयों पर अपने विचार रखे। इसके अतिरिक्त श्री रामनिवास आर्य भजनोपदेशक पानीपत, श्रीमती संगीता आर्या सहारनपुर के समाज सुधार के भजन हुए और वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने मंच का संचालन किया। श्री रतनसिंह आर्य, अनिल आर्य, ओमप्रकाश आर्य आदि ने विद्वानों को स्मृतिचिह्न देकर सम्मानित किया गया।

—**यशपाल आर्य, सिवानी बोलान (हिसार)**

आर्यसमाज छानीबड़ी (राज.) का महोत्सव सम्पन्न

स्वामी ईशानन्द जी की कर्मस्थली आर्यसमाज छानीबड़ी (राज०) का 29वां वार्षिक महोत्सव दिनांक 17, 18, 19 फरवरी 2015 को विधिवत् सम्पन्न हुआ। 17 फरवरी को मा० बलजीत आर्य झासल ने यज्ञ करवाया। उसके बाद शानदार जुलूस निकाला। वापिस पंडाल में पहुंचकर स्वामी सर्वदानन्द जी ने ध्वजारोहण किया। निम्न विद्वानों ने उत्सव में भाग लिया—स्वामी शिवानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, चौ० हरिसिंह सैनी, बदलूराम आर्य, बजरंगलाल आर्य, श्री रमेश गोयल (दिल्ली) आदि ने राष्ट्ररक्षा, नारी उत्थान, गोरक्षा, आर्यसमाज का देश की आजादी में योगदान, शराबबन्दी, धार्मिक पाखण्ड आदि विषयों पर सारगर्भित विचार रखे। कई प्रतिष्ठित दम्पतियों ने यजमान का स्थान ग्रहण किया।

भजनोपदेशकों में पं० नरदेव आर्य, पं० रामनिवास आर्य, बहिन कल्याणी आदि के शिक्षाप्रद समाज सुधार के भजन हुए। छानीबड़ी के अधिकारी श्री रामेश्वरलाल आर्य प्रधान, भूपेन्द्रआर्य, मानसिंह आर्य, जगतपाल आर्य, सुरेशकुमार आर्य आदि का विशेष सहयोग रहा। स्थानीय भजनोपदेशक श्री नोरंगलाल सागठिया के भजन हुये। रात्रि को हाजिरी रिकार्डतोड़ थी।

—**जयवीर आर्य मंत्री आर्यसमाज छानीबड़ी (राज०)**

आर्यसमाज जाण्डवाला बागड़ का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक 21-22 फरवरी 2015 को आर्यसमाज जाण्डवाला बागड (फतेहाबाद) का 22वां वार्षिक उत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। यज्ञ का कार्यक्रम परमजीत शास्त्री पुरोहित आर्यसमाज सिरसा ने करवाया। कई युवकों ने यज्ञोपवीत धारण किया। धर्म का स्वरूप, सुखी गृहस्थ, यज्ञ का महत्त्व, नशाखोरी, राष्ट्ररक्षा, ईश्वर, जीव, प्रकृति आदि पर प्रकाश डाला।

उपरोक्त विषयों पर विचार निम्न विद्वानों ने जिनमें स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी सर्वदानन्द, आचार्य मानसिंह पाठक, श्री रामकुमार आर्य प्रधान, श्री जगदीश सींवर, श्री हरिसिंह सैनी, बदलूराम आर्य, बजरंगलाल आर्य, बलवानसिंह विधायक आदि ने विचार रखे। मंच पर वानप्रस्थ अतरसिंह स्नेही, चौ० रणसिंह बनीवाल पूर्व विधायक, डॉ० नित्यानन्द आर्य, यशवीर आर्य, मा० रत्नसिंह आर्य, सूबेसिंह आर्य, चौ० युद्धवीर आर्य, बलवीर आर्य पूर्व सरपंच आदि उपस्थित थे। उत्सव पर पं० रामनिवास आर्य, बहिन अंजलि आर्या आदि के प्रेरणादायक भजन हुये। आचार्य हरिसिंह भूषण गुरुकुल मताना डीगी के साथ योगशिक्षक श्री मुकेश कुमार गुरुकुल के छात्रों का अद्भुत आसनों का व्यायाम प्रदर्शन करवाया। दर्शकों ने खूब ताली बजाई।

—**रमेश आर्य नम्बरदार, आर्यसमाज जाण्डवाला बागड (फतेहाबाद)**

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये। —आचार्य बलदेव

thearyasamaj.org

ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा

हर एक आर्य की तमन्ना होती है कि 'ऋषि उद्यान, अजमेर' और ऋषि जन्मभूमि 'टंकारा' जाकर ऋषि के प्रति अपने श्रद्धा-भाव प्रकट कर आऊँ। इन्हीं पवित्र भावनाओं के साथ 12 आर्यों की एक टोली दिनांक 13 फरवरी 2015 को श्री सुभाष आर्य, मन्त्री आर्यसमाज तिलक नगर रोहतक से ऋषि जन्मभूमि टंकारा के लिए निकली। जहाँ हर वर्ष महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिवस और बोधोत्सव बड़ी श्रद्धा से देश-विदेश से आये आर्यों द्वारा मनाया जाता है। हम 13 फरवरी को सुबह 8.40 पर रोहतक से ट्रेन द्वारा सराय रोहिल्ला, दिल्ली पहुँचे। वहाँ से दोपहर बाद राजकोट एक्सप्रेस द्वारा 14 तारीख को दोपहर राजकोट स्टेशन पहुँचे। स्टेशन से निकले ही थे कि टंकारा ट्रस्ट की बस बाहर मिल गई और इस प्रकार 3.30 बजे सायं पवित्र ऋषि जन्मभूमि टंकारा पहुँचे। पूरे रास्ते भर ईश्वरभक्ति और देव दयानन्द के भजन-गीत गाते हुए, नारे लगाते आये यह सब देखते ही सब में जोश भर जाता था तथा टंकारा पहुँचने तक तो सब ऋषिमय हो चुके भक्तों ने अपने तेज नारों से टंकारा ग्राम को गुंजायमान कर दिया। जैसे सब अपने प्यारे ऋषि को अपने आने की जानकारी देना चाहते हों। जैसे-जैसे बस से नीचे उतर रहे थे, मैंने देखा अनेक आर्यों की आँखें अपने प्यारे 'मूलशंकर' को खोजने के प्रयास में अपनी आँखों से अश्रु बहा रहे थे। इस बस में लगभग 55 व्यक्ति थे जो दूसरे प्रदेशों से आये थे। रोहतक से आये ऋषिभक्त बस से उतरकर एकत्रित होकर स्वागत कक्ष तक पहुँचे। इनमें श्री सुभाष आर्य, श्री ज्ञानसिंह, चन्द्रगुप्त शास्त्री, महावीर शास्त्री, प्रीतसिंह, रामपाल आर्य, श्रीमती सरोज, परमेश्वरी देवी, स्नेहलता और रामचन्द्र आर्य सुण्डाना आदि श्री राजेन्द्र शास्त्री और श्री राममुनि जी अगले दिन मिले। रोहतक के आर्यों का खूब जोश से स्वागत हुआ। सबका रुकने का स्थान बताया तथा सबको भोजन कराया गया। थोड़ी देर बाद सायं पांच बजे टंकारा की सुन्दर, भव्य और सुशोभित यज्ञशाला में यजुर्वेद पारायण यज्ञ और सत्संग में भाग लिया जिसमें यज्ञोपरान्त प्रभुभक्ति और महर्षि दयानन्द सरस्वती के सुन्दर भजनों ने वातावरण को दिव्य सुख देने वाला बना दिया। फिर रात्रि भोजन और रात्रि को फिर 11 बजे तक भजन-प्रवचन का सुन्दर कार्यक्रम चला और इसी प्रकार समय आगे बढ़ता गया। कार्यक्रमों के उपरान्त सभी आर्यजन बैठकर विचार विमर्श करते और फिर टंकारा जन्मभूमि की चर्चा चलती रहती।

टंकारा वह दिव्य भूमि है, जहाँ बालक मूलशंकर पैदा हुए, खेले, पढ़े और बड़े हुए। इनके पिताजी शिवभक्त थे और एक शिवरात्रि को पिता के कहने पर बालक मूल ने शिव के दर्शन करने के लिए व्रत रखा और पिताजी के साथ शिवमंदिर गये जहाँ और भी शिवभक्त थे। बालक मूलशंकर बड़ा उत्साहित था कि आज रात्रि को शिव प्रकट होंगे, हमारे सारे दु:खों को दूर कर देंगे। ज्यों-ज्यों रात्रि बढ़ती जा रही थी, मूल की जिज्ञासा भी बढ़ती गई। बालक ने देखा, धीरे-धीरे सब शिवभक्त सोते जा रहे हैं, इससे वे हैरान हुए और उन्हें जगाने लगे लेकिन सभी ने पिता समेत उसे डाटते हुए कहा कि तुम भी सो जाओ। लेकिन मूलशंकर शिव के प्रकट होने का इन्तजार करते रहे तभी देखा कि कुछ चूहे आये और शिवलिंग पर चढ़ी मिठाई को खाने लगे तथा मूल-मूत्र भी करते रहे और वे भगाने पर भी नहीं भागे। यह सब देखकर मूलशंकर को भारी दु:ख हुआ कि पिताजी शिव भगवान् के दर्शन कराने यहाँ लाये थे, व्रत रखा और जैसा कहा वैसे पूजा की फिर भी वह पत्थर का शिव हिला तक नहीं। दूसरे के दु:ख दूर क्या करता वह तो स्वयं अपनी रक्षा चूहों से नहीं कर सका। पिताजी, पण्डित व दूसरे जनों ने धमकाकर सोने के लिए कह दिया। इस महापाखण्ड को देखकर बालक मूलशंकर का हृदय दु:ख से भर गया उसका शिव भगवान के दर्शन करने का उत्साह सब बिखर गया और मन्दिर से रात्रि को ही घर माता के पास पहुँचा और अपने दु:खी होने का कारण बताया और अपनी मन की बात रखी कि माता मुझे सच्चे शिव को पाना है।

माँ ने उसे बहुत समझाया, खाना खिलाकर सुला दिया। वह रात्रि तो बीत गई लेकिन मूलशंकर को जगा गई और एक दिन मूल घर से निकल पड़ा सच्चे शिव को पाने के लिए। वर्षों घूमता रहा, बहुत साधु-पण्डित मिले, कुछ ने उसे लूटा, कुछ ने बहकाया और मूलशंकर जो अब दयानन्द बन गया था। दूर-दूर पहाड़ों मैदानों और वनों में सच्चे ईश्वर को पाने के लिए घूमता रहा।

आखिर एक दिन एक संन्यासी ने दयानन्द की पिपासा को शान्त करने का रास्ता बताया कि मथुरा में एक दण्डी स्वामी विरजानन्द हैं, केवल वही सच्चे ईश्वर का ज्ञान तुम्हें करा सकते हैं। इस प्रकार स्वामी दयानन्द मथुरा पहुँचे और महान् गुरु विरजानन्द जी के चरणों में सच्चे शिव (ईश्वर) के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त किया। लगभग ढाई वर्ष कठोर तपस्या से वेदों का ज्ञान प्राप्त किया तथा अपने महान् गुरु को अपना तन-मन और पूरा जीवन गुरुदक्षिणा में भेंट कर दिया। वेद के ज्ञान द्वारा गुलाम, दरिद्र भारत को जगाने-बचाने और उठाने का महान् कार्य कर वेद के ज्ञान की पुन: स्थापना की तथा करोड़ों लोगों के जीवन को बदल दिया। महर्षि ने ज्ञान-तर्क-बल से सिद्ध किया कि भारत के पतन और दरिद्रता का मुख्य कारण सच्चे ईश्वर को छोड़कर मूर्तिपूजा करना है जो तुरन्त त्याग देना चाहिए और सच्चे निराकार की उपासना कर अपना और दूसरों का उपकार कर मनुष्य जीवन को सफल बनाओ। इस प्रकार अपने महान् गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती को दिया वचन अपने आखिरी प्राण तक पूरा करते रहे। इस बीच अनेक पाखण्डी लोग, देशद्रोही उनके शत्रु बन गए थे। महर्षि ने माँ, जन्मभूमि, स्त्रीजाति, गऊमाता तथा गरीब, शोषित लोगों के उत्थान के लिए अथक महान् कार्य किया। गुलाम भारतवासियों को 'स्वराज' की राह दिखाई और संदेश दिया कि **"जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब मिलकर प्रीति से करें।"** इस महान् कार्य को आगे बढ़ाने के लिए 'आर्यसमाज' संसार को दिया। ऋषि से महर्षि बन भारत देश पर ही नहीं अपितु सारी मानवता पर अपने उपकारों की वर्षा करते हुए अन्त में शिवशंकर की भांति विष को पीकर सदा-सदा के लिए अमर हो गए।

महर्षि ने महान् ग्रन्थ 'सत्यार्थ-प्रकाश' देकर मानव जाति के भविष्य के कल्याण की राह दे गये। ऐ ऋषि तेरे उपकारों को तारों की भांति पूरी तरह गिना नहीं जा सकता। उस महान् दिव्य महर्षि को शत-शत नमन। **"धन्य है तुमको ऐ ऋषि, तूने हमें जगा दिया। सो-सो के लुट रहे थे, तूने हमें बचा लिया॥"**

टंकारा के कार्यक्रमों को सुन हम सब के हृदय श्रद्धाभाव से ओतप्रोत हो गये। 17 फरवरी को 2.30 बजे से सायं 6 बजे तक का कार्यक्रम मुख्य था जिसके मुख्य अतिथि गुजरात प्रान्त के राज्यपाल महामहिम श्री ओ.पी. कोहली ने महर्षि के जीवन के बारे में बड़े सुन्दर विचार रखे और उपमा दी कि महर्षि संसार के अनेक महापुरुषों के मध्य ऐसे महान् थे जैसे छोटे-छोटे पहाड़ों के बीच एक अति विशाल पहाड़ जो ऊँचे गगन को छू रहा हो जैसे। मुख्य वक्ता डॉ० विनय विद्यालंकार थोड़े समय में बहुत और अति सुन्दर विचार महर्षि के बारे में प्रस्तुत कर अपनी विद्वत्ता से सबको प्रभावित किया। देश-विदेश से आए सभी आर्यों ने इन सुखद पलों का आनन्द प्राप्त किया। इस बीच टंकारा ट्रस्ट के प्रबन्धक मन्त्री अजय सहगल ने रोहतक से आए आर्यों का स्वागत किया और श्री सुभाष सांगवान को पगड़ी पहनाकर दल को सम्मानित किया।

इस प्रकार पता ही नहीं चला कि कब उत्सव समाप्त हुआ और टंकारा से विदाई का समय आ गया। इन पांच दिनों में अनेक वैदिक विद्वानों और भजनोपदेश को सुनाकर ज्ञान और आनन्द प्राप्त किया। उन सब का आभार प्रकट करते हैं। रहने का, खाने का सुन्दर प्रबन्ध था। किसी को कोई कष्ट नहीं हुआ। ट्रस्ट मन्त्री अजय और हंसमुख आर्य मंत्री आर्यसमाज टंकारा का बहुत-बहुत धन्यवाद।

इस प्रकार दिनांक 19 फरवरी 2015 को 9.30 बजे प्रात: उस पवित्र भूमि टंकारा को प्रणाम कर वहां की सुखद यादों को संजोये हमारा दल रोहतक के लिए चला और 20 फरवरी को दोपहर ऋषि के गीत गाते, ऋषि का संदेश लिए **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** सब आर्य अपने घरों को पहुंच गये इस आशा और तमन्ना के साथ कि फिर से हम सब ऋषि जन्मभूमि टंकारा ऋषि को याद करने आयेंगे।

ओ३म् शान्ति: शान्ति: शान्ति:

—सुभाष आर्य सांगवान,
630/29, तिलक नगर रोहतक
मो० 9466258105

thearyasamaj.org

स्वामी शक्तिवेश निर्भीक, साहसी व दृढ़ निश्चय के महान् संन्यासी थे : नरेश कौशिक

झज्जर। वैदिक सत्संग मण्डल समिति के तत्त्वावधान में स्वामी शक्तिवेश जी का 26वां बलिदान दिवस मोहल्ला टिल्ला के मैदान में मनाया गया। इस अवसर पर 101 बेटियों ने यज्ञ कराया जिसका नेतृत्व श्री आनन्ददेव शास्त्री ने की। यजमान नम्रता, विवेक व देवेन्द्र कुमार रहे। मुख्यवक्ता श्री नरेश कौशिक विधायक बहादुरगढ़ रहे। उन्होंने अपने सन्देश में कहा कि स्वामी शक्तिवेश जी एक निर्भीक, साहसी, दृढ़निश्चय के धनी थे। हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए और उनके आदर्शों का पालन करना चाहिए।

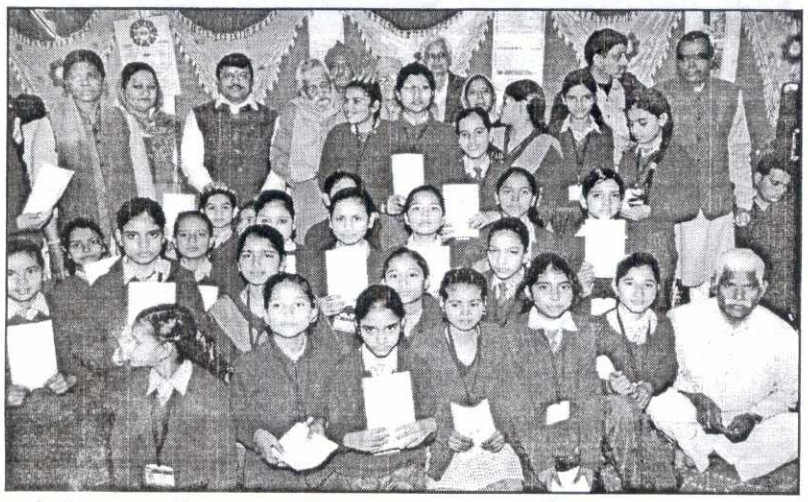

कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी बहादुगढ़ ने कहा कि स्वामी शक्तिवेश गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के अधिष्ठाता रहते हुए राजस्थान प्रतिनिधि सभा के महामंत्री व वैदिक आश्रम रिवाड़ी, गुरुकुल घासेड़ा में रहकर आर्यसमाज का बहुत काम किया था। स्वामी श्रद्धानन्द पलवल ने कहा कि बेटी बचाओ अभियान को आर्यसमाज ने हमेशा प्रचार किया है और नर और नारी की समता का पक्षधर रहा है। नारी माथे का मुकुट है। हर साल 2652000 बेटियां मारी जाती हैं जो कि एक जघन्य अपराध है और समाज पर कलंक है। बेटी बचेगी तो सृष्टि बचेगी ऐसा मानना आर्यसमाज का। ब्रह्मचारी सत्यप्रकाश दर्शनाचार्य ने कहा कि जो अपने देश पर करने वाले बलिदानियों को भूल जाता है वह राष्ट्र नष्ट हो जाता है इसलिए बलिदानियों की कुर्बानी याद रखनी चाहिए। स्वामी रामानन्द सरस्वती, प्राचार्य शामलाल आदि ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। पं० रमेश कौशिक, जयभगवान आर्य, सूबेदार भरत सिंह, सुभाष आर्य, वेदप्रिय आर्य, सोमदेव शर्मा, आशा अत्री, मंजू सैनी, राव रतीराम, चन्द्रपाल, फतेहसिंह भंडारी, चौ० महेन्द्रसिंह, स्पेशल जज, वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, ओमप्रकाश यादव, ब्र० सत्यप्रकाश, चन्द्रपाल, रमेश योगाचार्य, सत्यवीर प्रेरक, इन्द्रजीत, सन्दीप सैनी आदि सैकड़ों महिला पुरुष हाजिर रहे। लंगर का भी आयोजन किया गया। अन्त में बेटी बचाने व कन्या भ्रूणहत्या न करने की शपथ भी दिलाई गई।

-रमेशचन्द्र कौशिक अध्यक्ष, वैदिक सत्संग मण्डल समिति (झज्जर)

महर्षि दयानन्द और वेद

दिनांक 17 फरवरी 2015 को प्रात: आर्यसमाज महेन्द्रगढ़ के प्रांगण में बृहद् यज्ञ के पश्चात् महर्षि दयानन्द जी का बोधोत्सव मनाया गया जिसमें शहर के सभी गणमान्यजन और आर्यसमाज के पदाधिकारी उपस्थित थे जिनमें कुछ विद्वानों ने महर्षि दयानन्द जी के उपकारों पर विस्तार से वर्णन किया तथा याद दिलाया कि आज के दिन महर्षि दयानन्द को सच्चे शिव जानने की प्रेरणा मिली थी। उस प्रेरणा से उत्साहित होकर लगभग 20 वर्ष तक जंगल, पहाड़ और कंदराओं में भटकते फिरे और घोर तप और विद्या की प्राप्ति के लिए अनेक कष्ट सहन किए और सारे विश्व को ऐसा वेद मार्ग दर्शा गए जिससे मनुष्य मात्र का कल्याण मार्ग खोल गए। अन्त में स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती योगस्थली आश्रम महेन्द्रगढ़ व प्रधान आर्यसमाज महेन्द्रगढ़ ने अपने उद्बोधन में कहा कि ऋषि दयानन्द सरस्वती ने स्वगुरु स्वामी विरजानन्द दण्डी जी के आदेशानुसार मनुष्यकृत अनार्ष ग्रन्थों के विरुद्ध अभियान प्रारम्भ किया और पुन: वेदों की शिक्षा अपनाने पर बल दिया।

ऋषि दयानन्द जी न सायण भाष्य से सहमत हैं और न ही विदेशी विद्वानों से। दयानन्द जी के लिए वेद ईश्वरोक्त है, ज्ञान-विज्ञान का भण्डार है और वेदज्ञान मनुष्यमात्र के लिए है। इस पर किसी वर्ण-वर्ग एवं लिंग विशेष व्यक्ति का अधिकार नहीं है, इसलिए सर्वप्रथम ऋषि दयानन्द जी ने ही वेद का हिन्दी भाषा में अनुवाद किया।

सदियों से अलमारी में कैद वेद को मानव मात्र तक पहुँचाने का श्रेय देवदयानन्द जी को ही है। भारत के इस महान् सन्त का जीवन वेद के लिए था, महर्षि दयानन्द जी ऐषणारहित तपोनिष्ठ ऋषि थे, अत: वेदभाष्य करने के अधिकारी थे। महर्षि दयानन्द जी ने समाधि लगाकर वेद के गहन रहस्यों को समझा था, ऋषि जी की समझ निराली थी। संस्कृत भाषा पर उनका पूर्ण अधिकार था। वैदिक वाङ्मय का उनका अध्ययन अद्भुत था, उन्होंने अपने जीवन में साढ़े छ: हजार ग्रन्थों का अध्ययन किया था। वेदभाष्य के प्रारम्भ के दिनों में भ्रान्ति-निवारण में उन्होंने लिखा था—

मैं अपने निश्चय और परीक्षा के अनुसार ऋग्वेद से लेकर पूर्व मीमांसा पर्यन्त अनुमानत: लगभग तीन हजार ग्रन्थों को प्रामाणिक मानता हूँ। कितना विशाल और गहन अध्ययन था उस ऋषि का। जहाँ बहुधा भाष्यकारों ने वैदिक शब्दों के प्रचलित अर्थ (लौकिक और रूढ़ि) लेने की भूल की थी, वहाँ ऋषि जी ने इन शब्दों के प्रसंगानुसार यौगिक अर्थ किये। इस क्षेत्र में ऋषि जी की एक महान् देन है। हमें ऋषि के उपकार को कभी नहीं भूलना चाहिए और अधिक से अधिक अपने जीवन का समय उनकी शिक्षा को पालने में बिताना चाहिए।

—स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, योगस्थली आश्रम, महेन्द्रगढ़

स्नातक मण्डल का पुनर्गठन

गुरुकुल झज्जर में स्नातक मण्डल की बैठक आचार्य विजयपाल जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में पदाधिकारियों का सर्वसम्मति से चयन किया गया। अध्यक्ष पद के लिए महादेव शास्त्री ग्राम बोहर को चुना जबकि आचार्य सत्यवीर प्रेरक को संगठन का महामन्त्री चुना गया। उपमन्त्री रामवीर बालन्द को चुना और सुजीत शास्त्री भिवानी को कोषाध्यक्ष का दायित्व सौंपा गया। आचार्य विजयपाल संगठन के संरक्षक बनाए गये। महामन्त्री आचार्य सत्यवीर प्रेरक ने बताया कि कई वर्षों से संगठन में नई चेतना लाने की आवश्यकता अनुभव हो रही थी इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए युवा वर्ग को दायित्व सौंपे गए हैं। अगले वर्ष मनाई जा रही गुरुकुल की शताब्दी में विशेष योगदान, गुरुकुल की उन्नति के साथ-साथ सामाजिक सुधार में विशेष भूमिका निभाना संगठन के आगामी विशेष कार्यक्रम रहेंगे। इस बैठक में स्वामी देवव्रत, आचार्य वेदव्रत, आचार्य विजयपाल, डॉ. सुरेन्द्र कुमार कुलपति कांगड़ी विश्वविद्यालय उत्तराखण्ड, आचार्य विरजानन्द दैवकरणि, डॉ. राजकुमार उपनिदेशक, दिल्ली शिक्षा विभाग, डॉ. धर्मवीर प्रधान परोपकारिणी सभा अजमेर, वयोवृद्ध फतेहसिंह भण्डारी तथा गुरुकुल के प्रधान पूर्णसिंह देशवाल आदि विशिष्ट स्नातक उपस्थित रहे।

-सत्यवीर 9991521655

वेदप्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

दिनांक 18-02-2015 को सायंकाल सन्ध्या-हवन के बाद एक सभा का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता श्री कैलाश शास्त्री ने की। सर्वप्रथम ब्र० अमित आर्य ने भजन गाया। पूज्य स्वामी सांख्यायन सरस्वती (महाराष्ट्र) ने ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र अग्निमीळे पुरोहितं.... की व्याख्या सरल शब्दों में करते हुए बताया कि परमात्मा कहां रहता है, क्या करता है, उसी ने ही यह मानव चोला दिया उसको हमें हमेशा याद रखना चाहिए।

वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने संस्कारों के महत्त्व पर प्रकाश डाला। वैसे भी विद्यालय में आचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी ने नियम बना रखा कि सायंकाल प्रतिदिन एक सभा में बाहर का विद्वान् न होते हुए छात्र भी एक सभा करके छात्र व्याख्यान देते हैं।

-नवीन शास्त्री, ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।